खट्टर राज में लंबा इंतजार कराकर हुयी एचसीएस की परीक्षा के चंद आँखों देखे दिलचस्प पहलू.....

(लगभग डेढ़ साल की देरी से ही सही पर ले-दे कर बीते 31 मार्च को हरियाणा सरकार ने एचसीएस के 166 पदों के लिए इम्तिहान का पहला चरण संपन्न कराया। जाहिर है हर भर्ती की तरह इसमें भी लाखों अभ्यर्थियों ने शिरकत की। सेंटर पहुँचने और इम्तिहान दे कर वापस घर आने तक एक अभ्यर्थी को पेश आने वाली समस्याओं से साक्षात्कार करायेगी 'मजदूर मोर्चा' के लिए विवेक की यह ग्राउंड जीरो रिपोर्ट)

चंडीगढ़ से पलवल की हरियाणा रोडवेज के कंडक्टर टेकराम ने बीड़ी को मुट्ठी के बीचों बीच छुपाते हुए सुलगाया और देहाती कश के साथ धुंवे का गुबार पूरी बस में बैठे एचसीएस का इम्तिहान देकर लौटते अभ्यर्थियों पर ऐसे दे मारा जैसे पंडित पूजा के बाद आम के पत्तों से भक्तों पर जल का छिड़काव करता है। 'ओ रामबीर, पलवल वाड़े सपाही की छोरी आर्मी में किसे घनी ही पोस्ट ताईं लाग गी। होर सुन, गाम में बात चाल री से कि 3000 बच्चेयां में छोरी का 160वाँ नंबर आया है।' इस सूचना के जवाब में बस चला रहे ड्राइवर रामबीर ने ज्यों ही कहा कि "भई कति इनटेलीगेंट लाग री है", बस में बाहर से आ रहा शोर बस के भीतरी हंसी के शोर में दब गया।

फरीदाबाद के रहने वाले सचिन को सेंटर मिला था चंडीगढ़ के सेक्टर 20 में। इम्तिहान से मात्र 10 दिन पहले आम रेलगाड़ी में कन्फर्म सीट का मिलना मुश्किल जान प ?ा इसलिए मजबूरन शताब्दी एक्सप्रेस में आने-जाने की टिकट लेनी पड़ी। वापसी की टिकट वेटिंग में मिली पर गनीमत रही कि जाने की कन्फर्म सीट मिल गई। अब अगला टास्क था कोई कमरा लेना, तो स्टेशन के नजदीक ही ओयो रूम्स में एक ।00/- रुपये का कमरा बुक करा लिया। इन सबमे कुल खर्च लगभग 2500/- रुपये हो गया।

30 मार्च सुबह 7:40 की ट्रेन लेने के लिए 4:30 बजे उठ कर 5:30 बजे तक घर से निकल जाना तय था और 6 बजे की मेट्रो से नयी दिल्ली स्टेशन पहुंच गए। 11 बजे चंडीगढ़ स्टेशन पर पहुँच कर पाया कि होटल तो करीब है पर सेंटर वहां से बहुत दूर। चिंता हुई कि सेंटर पर पहुँचने के लिए अगले दिन कब निकलना उचित होगा। इसी उधेड़ बुन में होटल पहुँचे और पाया कि जिस कमरे में रुकना है उसमे बाहर की हवा और रोशनी को आने के लिए दरवाजे की दया दृष्टि पर निर्भर रहना पड़ता है।

सचिन ने तय किया कि सेंटर देख आया जाए। सेक्टर 20 के लिए 150 रुपये का ऑटो लिया पर संत रविदास जयंती के जूलूस से त्रस्त होकर ऑटो वाले ने बेवकूफ बनाते हुए कहा कि इस दीवार के पीछे है स्कूल और सचिन को 4 किलोमीटर की पैदल यात्रा चिलचिलाती धूप में करनी पड़ी। सेंटर देखा, शहर देखा और रात का खाने पर 300 रुपये खर्चने के बाद जैसे-तैसे सो सके।

31 मार्च इम्तिहान का दिन। क्योंकि रोल नंबर पर लिखा था कि 10 बजे से होने वाले टेस्ट के लिए 8 बजे रिपोर्टिंग करना जरूरी है तो दिए वक्त पर सचिन सेंटर के बाहर पहुंच गये। वही आम नजारा, लड़के-लडकियां जिन्होंने कई साल अपनी तैयारी में दिए, अंतिम मिनट में भी अपनी किताब को सीने से लगाए बैठे हैं। और सारे जहां का ज्ञान आत्मसात कर लेने के चक्कर में लगभग सभी अब भी पन्ने उलट-पलट रहे हैं।

8 बजे से बुलायी गई अभ्यर्थियों की भीड़ को 9 बजे भीतर जाने के लिए जांच से गुजरने का सुअवसर मिला। इस एक घंटे की लेट लतीफी ने याद करा दिया कि बेशक चंडीगढ़ बाकी भारत जैसा न बेतरतीब न दिखे पर प्रशासन ने खुद को इस देश के रंग में ही रंगा हुआ है। भीतर घुसते ही मुस्तैद पुलिस के सिपाही और अन्य ने वो सब उतरवा दिया जिसे पहनना जरूरी था। बेल्ट उतरवाने पर एक पंजाबी भाषी अभ्यर्थी का दर्द छलक पड़ा, "यार ऐ तां इंज ही है जीवें बैंक च सटैपलर नु तां रस्सी पायी हुन्दी ए ते पहे पिच्छों मोदी होर माल्या लै गए।"

एचसीएस की परीक्षा के पहले चरण के उपरांत संशय से भरे अभ्यर्थियों के पास हताश होने के कई कारण जान पड़े। विकास ने बताया कि एच सी एस ने पहली बार उसी पैटर्न को अपना लिया जिस पैटर्न को हटाने के लिए संघ लोक सेवा आयोग के खिलाफ भारत भर में आन्दोलन और धरने हुए।

2013 में अग्रवाल कमेटी की अनुशंसा पर अंतत: आयोग ने कॉमन एपटीटयूड टेस्ट को क्वालीफाइंग बनाया। मसला ये है कि इस बार हरियाणा सरकार ने वही भेदभावपूर्ण पैटर्न अपना लिया जिसमे अंग्रेजी के छात्रों को फायदा है। और क्योंकि सीसेट के इम्तिहान के नंबर भी अब मेरिट में जोड़े जाएंगे तो जिन बच्चों की शिक्षा ग्रामीण इलाकों में हुई है उनके साथ ये अन्याय है। इसी बात का झगड़ा चल भी रहा है। इस बार भी कुछ सवालों के विकल्पों को लेकर अभ्यर्थियों और आयोग में ठन सकती है।

2018 एचएसएससी के एक पेपर में मेरठ से प्रकाशित अरिहंत प्रकाशन की पुस्तक से अपशगुन ब्राह्मण जैसा वाहियात सवाल पूछने पर आयोग के अध्यक्ष को भारी विरोध के बाद अपने पद से हाथ धोना पड़ा था। वहीं यदि अभ्यर्थियों की मानें तो हाल ही में संपन हुए ग्रुप डी की परीक्षा में एमए स्तर के सवाल पूछे गए। यानी कि आयोग को पता ही नहीं कि किस स्तर पर कैसे सवाल पूछने हैं।

एक अन्य अभ्यर्थी शालिनी ने बताया कि एचसीएस का इम्तिहान देर से होने के पीछे यह भी एक कारण है कि पैटर्न को लेकर कुछ अभ्यर्थी कोर्ट का रुख कर चुके हैं और संभावना है कि कोर्ट उनके हक में फैसला दे भी दे। तो इस सूरत-ए- हाल कहीं यह इम्तिहान कैंसिल ही न हो जाए। वैसे ही चार साल बाद खट्टर सरकार ने एचसीएस परीक्षा कराने की जहमत उठाई है।

सचिन ने हताश मन से कहा कि क्योंकि दोनो परीक्षाओं में कुछ सवाल ऐसे थे जिनके विकल्प ही गलत थे और कुछ में तो एक ही सवाल के दो-दो एक जैसे विकल्प दिये गए हैं तो अब ये भी एक मुद्दा बनेगा इस टेस्ट का रिजल्ट न आने में। सालों मेहनत करने के बाद भी जब आपको ये न पता हो कि रिजल्ट आएगा कि नहीं और आएगा तो कब तक और अगर नहीं हुआ तो क्या अगला कोई इम्तिहान होगा भी या नहीं तो अब कैसे कोई सिर्फ तैयारियों के बल पर जीवन गुजार दे ?

देश के नौजवानों की अन्यथा दुर्दशा कुछ कम है जो सरकारें इन अभ्यर्थियों को किन्ही कारणों से दूर-दूर के सेंटर देतीं हैं। मजबूरन 5000 तक का खर्च करना या अपनी जान पर खेल कर रोडवेज की छतों पर सफर करने को मजबूर ये छात्र आयोग द्वारा बताये तीन चरणों में ही इम्तिहान को पास नहीं कर रहे बल्कि अब इस इम्तिहान के पांच चरण हैं। प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा, साक्षात्कार, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट। इस चरण में लगने वाले समय को अनंतकाल कहना उचित होगा।

यदि वाकई जनता के हित को साधने का प्रयत्न किया जाता तो अव्वल तो सेंटर अभ्यर्थी के नजदीक क्यों नहीं दिया जा सकता ? और यदि इतनी दूर देना ही है तो अतिरिक्त बसें और रेलगाड़ियों में अतिरिक्त कोच के साथ-साथ कन्फर्म सीट की व्यवस्था भी की जाए।

खैर चुनाव सर पर हैं और पाकिस्तान बगल में तो क्या रखा है इन नौजवानों के रोजगार में। झंडे बन कर तैयार हैं और डंडे खाली पड़े उनके इंतजार में हैं। इम्तिहान हो गया और नौजवानों को भी कुछ एडवेंचर चाहिए होगा। तो मुगलों की कब्र खोदी जाए और हिन्दू-मुस्लिम डीबेट को हवा दी जाए। क्यो मोदी जी ?

अब समय था उस तिलिस्मी पेपर को देखने का जो एक सील में बंद आया। ये वही पेपर था जिसके हर सवाल का जवाब देने के करीब तक पहुँचने के लिए अभ्यर्थियों ने जी जान से संविधान, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, विज्ञान, भारत और विश्व का भूगोल, अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध और जो आप सोच सकें वो सब पढ़ा था। पर कयामत तब टूटी जब कई सवालों के स्तर बेहद नीचे मिले। मसलन हरियाणा में मेटल्ड सड़क की कुल लम्बाई पूछी गयी थी और विकल्प थे :- 26062 किमी, 20051 किमी, 26131 किमी, या 26,129 किमी। यही नहीं, सवाल था, समुद्र तल से कितने किलोमीटर ऊपर एक तुल्याकारी उपग्रह है और विकल्प थे :- 35880, 35800, 35786, 37800। इसी प्रकार पृथ्वी का सरफेस एरिया बताना था और विकल्प ऐसे ही बूझो तो जाने सरीखे।

पहला इम्तिहान देकर बाहर निकले अभ्यर्थियों ने पुख्ता तौर पर अपने जोन के फ्रंट कैमरा में अपना-अपना चेहरा देखा होगा और सोचा होगा कि क्या इन ऐसे सवालों के लिए तूने इतनी किताबें बांची है? फिर सोच ले दूसरा वाला इम्तिहान देना है या फिर बस पकड़ लें घर वापस जाने की।

एक अन्य अभ्यर्थी कुशल ने बताया कि पहली बार उसने कोई प्रतियोगी परीक्षा दी है और कि उसने आइएएस को ध्यान में रख कर तैयारी शुरू की है पर यहाँ ऐसे सवाल देख कर सिर चकरा गया। क्या अर्थ है ऐसे बेतुके सवालों का? एक प्रशासक से प्रशासन सम्बन्धी प्रश्न पूछने के बजाय पहेलियाँ पूछी जा रही हैं। यहाँ तक कि संविधान से कोई सवाल ही नहीं। अब शायद तैयारी का तरीका बदलना पड़ेगा।

30 वर्षीय वीनू के हाल भी बाकियों जैसे ही थे। वीनू ने माना कि उनको कुछ तो अंदाजा था कि ऐसे ही वाहियात प्रश्न आ सकते हैं। सिर्फ हरियाणा ही नहीं लगभग सभी राज्य आयोगों ने ऐसा ही रायता फैलाया हुआ है। उत्तर प्रदेश का उदाहरण देते हुए वीनू ने बताया कि एक बार प्रश्न आया कि प्लासी की लड़ाई में नवाब सीराजुदौला कैसे भागा :- हाथी पर, घोड़े पर, पैदल या गधे पर? अर्थात हरियाणा का आयोग ऐसे सवाल पूछता है जिसे कोई सोच भी न सके जबकि संघ लोक सेवा आयोग वो सवाल पूछता है जिसका पढ़े हुए लोग ही जवाब दे सकें।

पहला इम्तेहान सचिन को एक हादसा ही जान पड़ा पर यहाँ विकल्प चार नहीं सिर्फ एक ही है या कहें एक भी नहीं। और इसी कारण असफाक हुसैनी की ये पंक्तियाँ मन में दोहराते कि "हाथ बांधे क्यों खड़े हो हादसों के सामने, हादसे तो कुछ भी नहीं हौसलों के सामने" अगले इम्तिहान के लिए तीन बजे दोबारा बेल्ट उतार कर सीट पर जा बैठे।

यह दूसरा परचा सामान्य मानसिक तर्कता का टेस्ट था। हालाँकि इसमें भी आयोग ने अपनी अक्ल के घोड़े दौडाए हुए थे जिसका एक नमूना निम्नलिखित कहानी और उसके सवाल में देखा जा सकता है:-

एक बार एक चीटीं जो एक नदी पर पानी पीने आई थी, पानी में गिर गई और तेज धार में बह गई। वह डूबने वाली थी कि एक कबूतर ने पानी में एक पत्ता गिरा दिया जिसपर चढ़ कर चीटीं ने अपनी जान बचा ली। कुछ समय बाद कबूतर सोया हुआ था और एक शिकारी उसपर निशाना लगाने की फिराक में था तभी चीटी ने उसके पैर में काट लिया और निशाना चूक गया जिससे कि कबूतर की जान बच गई। इस तरह चीटी ने कबूतर का अहसान उतार दिया।

प्रश्न 1. चींटी ने कबूतर का बदला उतार दिया।

1) कबूतर से प्यार करके
2) पत्ते को पानी में गिराकर
3) कबूतर को जानवरों से बचा कर
4) शिकारी को काटकर

प्रश्न-2) चींटी नदी के पास आई

1) बच्चों के लिए पानी लेने
2) तेज धारा को देखने
3) पानी पीने के लिए
4) नहाने के लिए

ऐसा जान पड़ता है जैसे कि यह सवाल खुद मुख्मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने तैयार किया है। ऐसे हास्यास्पद सवालों के जवाब देने के बाद सचिन और अन्य सभी अभ्यर्थी जो दूर-दूर से आये थे, बस और ट्रेन पकड़ने की ओर लपके। क्योंकि सचिन की ट्रेन टिकट कन्फर्म नहीं हुई थी इसलिए पलवल जाने वाली रोडवेज में चढ़ गए। किस्मत से सीट भी मिल गई। बमुश्किल एक मिनट में अभ्यर्थी बच्चों की भीड़ मधुमक्खियों की तरह बस में भर गई।

चंडीगढ़ से पानीपत तक हर शहर के नीचे बच्चों का एक मेला सा खड़ा किसी बस के रुक जाने का इंतजार कर रहा था। कभी-कभी बस के आगे तक आ जाते थे कि शायद डर के बस रोक दे कोई पर ड्राइवर भी तो इसी सरकारी तंत्र का हिस्सा है जो जानता है कि इस देश में हक के लिए जान देने की हिम्मत उनमे तो बिल्कुल नहीं जो सरकार में अपनी सीट चाहते हैं। और बस वाले बस के सभी दरवाजों को मुस्तैदी से बंद किये भागे जा रहे थे।

5:15 शाम को बस में बैठे सचिन रात 1:30 बजे फरीदाबाद बाटा चौक पर पहुचे। लगभग 4000 रुपये खर्च करने के बाद अंत में एक कविता गुनगुनाते अपने घर का रुख किया जिसके बोल हैं:

हम वो पत्ते नहीं जो शाखों से टूट जाएं,
आँधियों से कह दो अपनी औकात में रहें।

चुनावी ताप में मेंढकी को भी हुआ जुखाम

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

रणवीर : पुलिसिया लूट से पेट नहीं भरा!

जनता को आगामी पांच साल तक लूटने व ठगने का लाइसैंस हासिल करने के लिये तमाम छोटे बड़े सियासी दलों के अलावा निर्दलीय भी चुनाव मैदान में कूदने की तैयारी में जुटे हैं। ऐसे में भला पूर्व आईपीएस रणवीर शर्मा कैसे पीछे रह सकता है। सन् 2014 के लोकसभा चुनावों में इसी रणवीर ने आम आदमी पार्टी का टिकट पाने के लिये खूब पापड़ बेले थे। रोहतक में 'आप' की एक जनसभा में वह मंच पर भी चढ़ बैठा था। बेशक वह 'आप' के वर्तमान राज्य मुखिया नवीन जयहिंद की शह पर ही इतनी हिमाकत कर पाया था, लेकिन योगेन्द्र यादव जैसे नेताओं ने उसे वहां से खदेड़ दिया था। उसके बावजूद भी रणवीर तब तक 'आप' के चक्कर काटता रहा जब तक सारी टिकटें बंट नहीं गयी।

लोकसभा चुनाव के बाद विधानसभा के चुनाव आने तक इसने अपनी एक पार्टी पंजीकृत करा ली। इस पार्टी से टिकट मांगने वाला तो कोई था नहीं फिर भी इसने कुछ लोगों को बेवकूफ बनाकर चुनाव में खड़ा कर दिया था। जैसी की उम्मीद थी रणवीर सहित उन सबकी जमानतें जब्त हुई। जितनी-जितनी उनको वोट मिली उसे देखते हुए जमानत जब्त बहुत हल्का शब्द है।

लेकिन इसके बावजूद रणवीर ने कोई सबक नहीं सीखा। इस बार फिर से वह चुनाव लड़ने की जुगत भिड़ा रहा है। अपने बूते तो उसकी हिम्मत है नहीं, इसलिए जजपा से गठबंधन करके चुनाव लड़ने का ख्वाब वह पाल रहा है। इसके लिये उसने दुष्यंत चौटाला को सुझाव दिया कि उसे फरीदाबाद से टिकट दिया जाये तो वह जीत सकता है। अपने पक्ष में उसका पहला तर्क यह था कि भाजपा व कांग्रेस गूजर को खड़ा कर रही हैं, एक अन्य पार्टी जाट को तो ऐसे में ब्राह्मण वोटों के दम पर वह चुनाव जीत सकता है। उसका दूसरा तर्क यह था कि वह तीन साल तक फरीदाबाद का एसपी रहा है इसलिये बहुत लोग उसे वोट देंगे।

लेकिन उसने चौटाला को यह नहीं बताया कि उसके काले कारनामों के बारे में जब 'मजदूर मोर्चा' ने समाचार प्रकाशित किये थे तो वह किस कदर बौखला गया था और 'मजदूर मोर्चा' सम्पादक पर एक के बाद एक पांच झूठे मुकदमें दर्ज किये थे। इन मुकदमों के विरोध में शहर की जनता ने मशाल जुलूस निकाला व जमकर धरने प्रदर्शन किये थे और कोर्ट ने सभी केसों को खारिज कर दिया था। ऐसे में फरीदाबाद से उसकी जमानत बुरी तरह से जब्त होना तय है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06